मूल्य 1 रु.

वर्षः 11 - अंक : 7, मुंबई, गुरुवार, 11 फरवरी, 2021 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक

मुंबई हलचल

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त R

अब हर सच होगा उजागर

अंधेरी में सिलेंडर गोदाम में लगी आग

चार लोग झुलसे

संवाददाता

मुंबई। मुंबई के उपनगर अंधेरी स्थित एलपीजी सिलेंडर के एक गोदाम में बुधवार सुबह भीषण आग लगने से चार लोग झुलस गए। आग से आसपास के कुछ मकानों को भी नुकसान पहुंचा है। अधिकारियों ने बताया कि पश्चिमी उपनगर के वर्सोवा इलाके में यारी रोड स्थित गोदाम में सिलेंडर फटने से सुबह करीब नौ बजकर 40 मिनट पर आग लग गई। निगम के एक अधिकारी ने बताया कि आग से चार लोग झुलस गए जिन्हें इलाज के लिए नजदीकी कूपर अस्पताल ले जाया गया। चार घंटे बाद दोपहर डेढ़ बजे आग पर काबू पा लिया गया। (शेष पृष्ठ 3 पर)

महाराष्ट्र की सियासत में बदलेंगे समीकरण?

यह कोई पहला मामला नहीं है जब बीजेपी और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के एक साथ आने की खबरें सुर्खियां बनी हैं। इसके पहले भी नितिन गडकरी और राज ठाकरे के बीच में वर्ली के एक होटल में मुलाकात हुई थी। तब गडकरी ने भी ऐसे ही संकेत दिए थे

बीजेपी से हाथ मिला सकती है राज ठाकरे की पार्टी

मुंबई। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और मौजूदा नेता प्रतिपक्ष देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि राज ठाकरे की एमएनएस भविष्य में बीजेपी के साथ आ सकती है। फडणवीस के इस संकेत ने महाराष्ट्र की राजनीति में एक नया समीकरण बनाने की नींव रखी है। (शेष पृष्ठ 3 पर)

मनसे साथ आई तो क्या होगा?: महाराष्ट्र बीजेपी इन दिनों शिवसेना का तोड़ ढूंढने में जुटी हुई है। राज ठाकरे को अपने साथ मिलाकर बीजेपी शिवसेना को जाने वाले मराठी वोट को बांटने की फिराक में है। शिवसेना के बढ़ती दूरियों को देखते हुए बीजेपी के लिए महाराष्ट्र में मनसे जैसी पार्टी का सपोर्ट काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। लेकिन मनसे को साथ लेने से बीजेपी उत्तर भारतीय मतदाता बिदक सकते हैं। वहीं राज ठाकरे की साख खोती पार्टी को बीजेपी के साथ जुड़ने पर कुछ लाभ मिल सकता है।

फर्जी तरीके से आधार कार्ड हासिल करने के आरोप में

10 नेपाली नागरिक गिरफ्तार

संवाददाता

मुंबई। मुंबई में फर्जी तरीके से आधार कार्ड हासिल करने के आरोप में 10 नेपाली नागरिकों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने कहा कि मुंबई पुलिस की अपराध शाखा की इकाई-11 ने दो फरवरी को उपनगरीय बोरीवली में आधार कार्ड सुविधा केंद्र के एक ऑपरेटर और एजेंट को गिरफ्तार किया था। (शेष पृष्ठ 3 पर)

दीप सिद्धू ने किया खुलासा

बिहार के रास्ते नेपाल जाने की थी उसकी तैयारी

नई दिल्ली। आरोपी दीप सिद्धू ने खुलासा किया है कि वह पकड़े जाने के डर से 26 जनवरी की रात सिंघु बॉर्डर होते हुए सबसे पहले सोनीपत पहुंचा था। इसे सुखदेव ढाबे के पास आखिरी बार सीसीटीवी फुटेज में देखा गया था। वह पंजाब, हिमाचल प्रदेश समेत कई राज्यों में छिपकर रहा। सिद्धू को सोमवार रात उस वक्त दबोचा गया जब वह करनाल गोल्डन हट ढाबे के पास ट्रैक्टर से उतर एसयूवी के आने का इंतजार कर रहा था। (शेष पृष्ठ 3 पर)

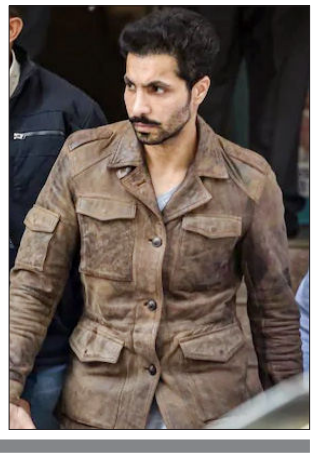

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

हमारी बात

परंपरा से आगे

किसी भी संसदीय लोकतंत्र की इससे अधिक खूबसूरत तस्वीर और क्या होगी, जब विपक्ष के एक कद्दावर नेता की सदन से विदाई के मौके पर सत्ता पक्ष के सबसे बडे नेता भावुक हो जाएं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल राज्यसभा में कांग्रेस के नेता गुलाम नबी आजाद समेत चार सदस्यों के योगदान को जिस तरह सराहा और उन्हें भावी जीवन की शुभकामनाएं देते हुए जो कुछ कहा, वह महज परंपरा का निर्वाह नहीं था, उसमें संसदीय राजनीति के उच्च मूल्यों का महत्व पढ़ा जा सकता है। दुर्योग से, ऐसी तस्वीरें आजकल दुर्लभ हो गई हैं, मगर हकीकत यही है कि भारतीय लोकतंत्र के हाल तक के सफर में तमाम राजनीतिक रंजिशों और कटु बहसों के बावजूद सत्ता पक्ष और विपक्ष के नेताओं में निजी स्तर पर रिश्ते गरमाहट भरे रहे। प्रधानमंत्री ने 2006 में श्रीनगर के आतंकी हमले में मृत गुजराती लोगों के शवों को उनके गृह प्रदेश पहुंचाने की घटना का जिक्र करके यही बताने की कोशिश की कि कैसे संवेदना के स्तर पर सत्ता और विपक्ष की दूरियां पट जानी चाहिए। गुलाम नबी आजाद का लंबा संसदीय अनुभव रहा है और सत्ता व विपक्ष के विभिन्न बड़े पदों की जिम्मेदारी को उन्होंने जिस गंभीरता से निबाहा, इसके लिए खुद संसद ने उन्हें सम्मानित किया है, पर अपने विदाई भाषण में उन्होंने जिस तरह आम भारतीय मुसलमानों की सोच को ध्वनित किया है, उसकी सराहना की जानी चाहिए। भारतीय मुसलमान हमेशा अपने हिन्दुस्तानी होने पर फख करते रहे हैं और जब कभी भी सरहद पार से उनकी हिमायत में कोई कुटिल आवाज उठी, उसका खरा जवाब किसी अन्य समुदाय से पहले उन्होंने ही दिया। गुलाम नबी आजाद ने उचित ही इस मौके पर नकली खैरख्वाहों को स्मरण कराया कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इराक आदि मुल्कों के हालात देखिए, और फिर यह आकलन कीजिए कि 'हम' क्यों खुशकिस्मत हैं। यह सही है कि भारत में भी कुछ कट्टरपंथी लोग माहौल बिगाड़ने के मौके तलाशते रहते हैं, पर भारतीय समाज का ताना-बाना, उसका मिजाज ही ऐसा है कि उसमें ऐसे तत्वों की दाल नहीं गलती। फिर भी, हमारे पुरखों ने 1947 में जिस भारत की कल्पना की थी, उसके आदर्श को अभी हमें हासिल करना है, और वह आदर्श सर्वश्रेष्ठ इंसानियत व भारतीयता की बुनियाद पर खड़ा होगा। विडंबना यह है, जिस राजनीतिक वर्ग पर इसके लिए मार्ग प्रशस्त करने का सर्वाधिक जिम्मा है, वह अब सत्तावादी लक्ष्यों से ज्यादा प्रेरित होने लगा है। सामाजिक विभेद में अवसर तलाशने की प्रवृत्ति राजनीतिक दलों और नेताओं के आपसी रिश्ते को भी नुकसान पहुंचाने लगी है। हमने कई राज्यों में बदले की राजनीति को प्रश्रय पाते देखा है। यह लोकतंत्र के लिए कतई सुखद नहीं है। हम नजरअंदाज नहीं कर सकते कि पड़ोसी मुल्कों में लोकतंत्र की जमीन बेहद भुरभुरी है, और वे हमसे प्रेरणा लेकर ही खडे. होने की कोशिश करते हैं। उनमें लोकतंत्र का होना हमारे लिए भी महत्वपूर्ण है। इसलिए देश में संसदीय लोकतंत्र की कामयाबी के वास्ते सत्ता और विपक्ष को एक-दूसरे के सम्मान और अधिकारों की चिंता करनी होगी। अनुभवी सांसदों के कार्यकाल इस बात की गवाही देते हैं कि आपसी संवाद और सहमति के बिंदुओं की ईमानदार तलाश ने उन्हें जनता की नजरों में सुर्खरू किया है। नए सांसदों को उनसे सीखना चाहिए।

संपूर्ण मानवता के खिलाफ हिमालयी भूल !

हिमालय की चोटियों पर और उसकी तलहटी में भी कुछ ऐसा हो रहा है, जिसे आंख मूंद कर विकास की होड़ में लगे लोग देख नहीं पा रहे हैं। बार-बार हिमालय की ओर से इसका संकेत भी दिया जा रहा है। जून 2013 में हिमालय की पहाड़ियों में हाल के समय की सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा आई थी। हजारों लोग मारे गए थे और पहाड़ों में बहुत कुछ तहस-नहस हो गया था। दुर्भाग्य की बात है कि इस घटना से सबक लेकर प्रकृति के साथ चलने या प्रकृति के अनुरूप निर्माण करने की बजाय सरकारों ने ज्यादा पक्के निर्माण शुरू कर दिए। केदारनाथ धाम तक जाने वाली सड़कों को बेहतर बनाने के नाम पर पक्का बनाया गया, हेलीपैड नए बनाए गए और विकास के नाम पर कंक्रीट के कुछ अन्य निर्माण भी कर दिए गए। अब करीब सात साल के बाद एक बार फिर हिमालय ने अंधाधुंध निर्माण के खतरे का संकेत दिया है। इस बार चमोली में ग्लेशियर टूट कर नदी में गिरा है, जिससे आई बाढ़ में पनबिजली की दो परियोजनाएं पूरी तरह से बह गईं, नदियों के किनारे बसे गांवों के घर बह गए, बड़ी संख्या में मवेशियों और चरवाहों को नदी का बहाव लील गया। कम से कम नौ राज्यों के दो सौ से ज्यादा लोग मारे गए या लापता हैं।

इन दोनों घटनाओं से बहुत पहले 1991 में उत्तरकाशी में और फिर 1999 में चमोली जिले में बड़ा भूकंप आया था। पहाड़ और जंगल में प्रकृति का संतुलन बिगड़ने का उसे शुरूआती संकेत माना जा सकता है। लेकिन तब भी कोई सबक नहीं लिया गया। उससे बहुत पहले हिमालय क्षेत्र में चिपको आंदोलन शुरू हो गया था। स्थानीय लोग जिनके लिए पहाड़, नदी, पेड़, पशु सब परिवार के सदस्य होते हैं उन्होंने विकास के नाम पर होने वाली पेड़ों की कटाई का विरोध किया था। सोचें, कितने दूरदर्शी, ईमानदार और प्रतिबद्ध लोग थे, जिन्होंने चिपको आंदोलन चलाया था। आज अगर वे लोग आंदोलन करते तो उनको आंदोलनजीवी बता कर उनका मजाक उड़ाया जाता। लेकिन उन दूरदर्शी लोगों को समझ में आ गया था कि अगर पेड़ काटे जाते रहे तो न हिमालय बचेगा और न उसकी गोदी में बसे गांव-शहर बचेंगे। दुनिया भर के भूकंप वैज्ञानिक और प्रकृति का अध्ययन करने वाले लोग पहले ही बता चुके हैं कि उत्तराखंड का पूरा इलाका भूकंप की ऐसी फॉल्ट लाइन पर है, जहां भूकंप, भूस्खलन या ग्लेशियर का टूटना आम बात है। बड़े भूकंप आते रहने की संभावना भी हमेशा बनी रहती है। लेकिन स्थानीय लोग इस बात को जानते हुए भी इस इलाके में बसे रहे तो इसका कारण यह था कि वे प्रकृति के साथ कदमताल कर रहे थे। वे प्रकृति के विरूद्ध नहीं जा रहे थे, पहाड़ के विरूद्ध नहीं जा रहे थे, जंगल काट नहीं रहे थे, बल्कि उसे बचा रहे थे। अगर जंगल और पहाड़ से छेड़छाड़ नहीं होती तो भूकंप या भूस्खलन या ग्लेशियर आदि से ज्यादा बड़ा नुकसान नहीं होता। यह प्रकृति के अपने चक्र की तरह चलता रहता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। चिपको आंदोलन के व्यापक असर के बावजूद विकास के नाम पर पहाड़ों को काटना, नदियों का रास्ता बदलना, जंगल काटना, कंक्रीट के निर्माण करना, सड़कें और होटलों का बनना जारी रहा। किसी को पहाड़ से निकल रही नदियों का दोहन करना था तो किसी को पहाड़ के सौंदर्य का कारोबारी इस्तेमाल करना था। कहीं पनबिजली की परियोजना लग रही थी तो कहीं पर्यटकों के लिए होटल बन रहे थे। विकास की इस अंधी दौड़ का कुल जमा नतीजा 2013 की केदारनाथ की और 2021 की चमोली की घटना है।

विकास के नाम पर असल में हिमालय की पूरी पारिस्थितिकी के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। सोचें, पूरी दुनिया में क्लाइमेट चेंज यानी जलवायु परिवर्तन का सबसे प्रत्यक्ष लक्षण क्या है? सबसे प्रत्यक्ष लक्षण ग्लेशियर यानी हिमखंडों का पिघलना है। अंटार्कटिका में भी बर्फ पिघल रही है और हिमालय में भी बर्फ पिघल रही है। क्या विकास के नाम पर पनबिजली की परियोजना लगा रहे लोगों को इसका पता नहीं है? अगर उनको पता है कि धरती का तापमान बढ़ने या जलवायु के गर्म होने का सबसे पहला असर ग्लेशियरों पर हो रहा है फिर ग्लेशियरों के इतने नजदीक पनबिजली की परियोजना लगाने की अनुमति कैसे मिली? यह सवाल पहले उठाया जाना चाहिए था। फिर भी देर से ही सही और दुर्घटना के बाद ही सही, लेकिन यह सवाल पूछा जाना चाहिए। यह आपराधिक कार्रवाई है, जो ग्लेशियरों के पिघलने की पुख्ता सूचना के बावजूद ग्लेशियरों के इतने नजदीक जाकर पनबिजली की परियोजना शुरू की गई और सैकड़ों-हजारों लोगों का जीवन खतरे में डाला गया। ग्लेशियल लेक यानी ग्लेशियर पिघलने से बनने वाली झीलों की बढ़ती संख्या से बहुत पहले से यह अंदाजा लग जाना चाहिए था कि अगर विकास के नाम पर होने वाली गतिविधियों को रोका नहीं गया तो प्रलय आ सकती है। लेकिन लालच के मारे इंसान ने उस संकेत पर भी ध्यान नहीं दिया। काठमांडो स्थित संस्थान इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट ने 2005 में सेटेलाइट इमेज के आधार पर बताया था कि उत्तराखंड में 127 ग्लेशियल लेक हैं यानी ग्लेशियर पिघलने से बनने वाले झीलें हैं। इसके पांच साल बाद यानी 2010 में हैदराबाद की एक संस्था नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर में काम करने वाले दो वैज्ञानिकों ने बताया कि अब इस इलाके में 362 ग्लेशियर लेक बन गए हैं। यानी पांच साल के अंदर ग्लेशियर पिघलने से बनने वाली झीलों की संख्या दोगुने से भी ज्यादा हो गई। पांच साल में 235 नए झील बन गए। अगले दस साल में इनकी संख्या में और इजाफा ही हुआ होगा लेकिन अफसोस की बात है कि इनका साल दर साल का हिसाब-किताब नहीं रखा जाता है। असल में जलवायु परिवर्तन और धरती का तापमान बढ़ने से पूरे हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियर पिघल रहे हैं और इसकी वजह से नए-नए झील बन रहे हैं। यह परिघटना सबसे पहले 1960 में देखी गई थी। लेकिन तब इस इलाके में निर्माण की गतिविधियां नहीं चल रही थीं और पेड़ भी नहीं काटे जा रहे थे इसलिए ग्लेशियर का पिघलना मौसमी परिघटना थी। लेकिन 1990 के बाद से इसमें तेजी आ गई और सिर्फ गर्मियों में नहीं, बल्कि ग्लेशियर सालों भर पिघलने लगे। तभी यह कहने में हिचक नहीं है कि चमोली की दुर्घटना एक मनुष्य निर्मित आपदा है। इसे प्राकृतिक आपदा कहना ठीक नहीं होगा। प्राकृतिक आपदा तो इस क्षेत्र में पहले भी आती थी। अलकनंदा में 1970 में आई बाढ़ या भागीरथी की 1978 की बाढ़ की यादें इस क्षेत्र के लोगों के जेहन में आज भी ताजा है।

अंग्रेजीः लोकतंत्र बना जादू-टोना

स्वतंत्र भारत को अंग्रेजी ने कैसे अपना गुलाम बना रखा है, इसका पता मुझे आज इंदौर में चला। इंदौर के प्रमुख अखबारों के मुखपृष्ठों पर आज खास खबर यह छपी है कि कोरोना का टीका लगवाने के लिए 8600 सफाईकर्मी लोगों को संदेश भेजे गए थे लेकिन उनमें से सिर्फ 1651 ही पहुँचे। बाकी को समझ में ही नहीं आया कि वह संदेश क्या था ? ऐसा क्यों हुआ ? क्योंकि वह संदेश अंग्रेजी में था। अंग्रेजी की इस मेहरबानी के कारण पाँच टीका-केंद्रों पर एक भी आदमी नहीं पहुँचा। भोपाल में भी मुश्किल से 40 प्रतिशत लोग ही टीका लगवाने पहुंच सके। कोरोना का टीका तो जीवन-मरण का सवाल है, वह भी अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण देश के 80-90 प्रतिशत लोगों को वंचित कर रहा है तो जरा सोचिए कि जो जीवन-मरण की तात्कालिक चुनौती नहीं बनते हैं,

ऐसे महत्वपूर्ण मसले अंग्रेजी के कारण कितने लोगों का कितना नुकसान करते होंगे ? देश की संसद, अदालतें, सरकारें, नौकरशाही, अस्पताल और उच्च-शिक्षण संस्थाएं अपने सारे काम प्रायः अंग्रेजी में करती हैं। उन्होंने आजादी के 74 साल बाद भी भारतीय लोकतंत्र को जादू-टोना बना रखा है। भारत में ही अंग्रेजी ने एक फर्जी भारत खड़ा कर रखा है। यह फर्जी भारत नकली तो है ही, नकलची भी है, ब्रिटेन और अमेरिका की नकल करनेवाला। यह देश के 10-15 प्रतिशत मुट्ठीभर लोगों के हाथ का खिलौना बन गया है। ये लोग कौन हैं ? ये शहरी हैं, ऊँची जाति के हैं, संपन्न हैं, शिक्षित हैं। इनके भारत का नाम इंडिया है। एक भारत में दो भारत हैं। जिस भारत में 100 करोड़ से ज्यादा लोग रहते हैं, वह विपन्न, अल्प-शिक्षित है, पिछड़ा है, ग्रामीण है, श्रमजीवी है। भारत में आज तक बनी किसी सरकार ने इस सड़ी-गली गुलाम व्यवस्था को बदलने का दृढ़ संकल्प नहीं दिखाया। मैंने अब से 55 साल पहले इंडियन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज में अपना अंतरराष्ट्रीय राजनीति का शोधग्रंथ हिंदी (मातृभाषा) में लिखने का आग्रह किया तो मुझे स्कूल से निकाल दिया गया। कई बार संसद में हंगामा हुआ। अंत में मेरी विजय हुई लेकिन वह ढर्रा आज भी ज्यों का त्यों चल रहा है। सारे देश में आज भी उच्च अध्ययन और शोध अंग्रेजी में ही होता है।

दैनिक
मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

सेलेब्रिटीज ट्वीट की जांच का मामला

नाना पटोले ने कहा- सभी पोस्ट में एक जैसी भाषा का हुआ इस्तेमाल, भाजपा को फंसने का सता रहा है डर

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र कांग्रेस के नवनियुक्त अध्यक्ष नाना पटोले मंगलवार को कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी से मिलने दिल्ली पहुंचे थे। यहां मीडिया से बात करते हुए पटोले ने कहा कि कांग्रेस में लोकतंत्र है और यहां सभी को अपनी बात रखने का हक है। ये बीजेपी नहीं, जहां मोटा भाई और छोटा भाई के आगे किसी को बोलने की इजाजत नहीं। बता दें कि पटोले महाराष्ट्र के बड़े ओबीसी चेहरे हैं और उनके कद को देखते हुए पार्टी ने उनके कंधों पर राज्य की जिम्मेदारी सौंपी है। किसान आंदोलन के मामले में बाहरी और अंदरूनी मामले में जिन सेलिब्रिटी ने ट्वीट किया, उनके ट्वीट की जांच के आदेश पर नाना पटोले ने कहा कि बीजेपी की देश भक्ति देश को खत्म करने की है। साथ ही कहा कि किसान आंदोलन को जिस तरह उन्होंने बर्बाद करने की कोशिश की, उससे उनकी देश भक्ति सबके सामने आ आगे आ गई है। जहां तक बात सेलेब्रेटी के ट्वीट की है तो हमें पूरा विश्वास है की ये

बीजेपी सरकार का ही काम है। नाना पटोले ने कहा कि किसान आंदोलन दबाने के लिए 26 जनवरी को बीजेपी ने जो लाल किले पर तांडव कराया इससे उसकी छवि खराब हो गई है और इसलिए बीजेपी अपनी छवि साफ करने के लिए वो इस प्रकार के काम कर रही है। साथ ही कहा कि सेलिब्रिटी के नाम का इस्तेमाल करके केंद्र सरकार अपना संदेश जनता तक देने की कोशिश कर रही है। नाना पटोले ने पूछा कि अगर ऐसा नहीं तो इस फैसले का बीजेपी और केंद्र के नेता इतना विरोध क्यों कर रहे हैं? शायद इन्हें अपनी पोल खुलने का डर सता रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सुनील शेट्टी ने जिस नेता के ट्वीट को रिट्वीट किया है, वो बीजेपी का नेता है। नाना पटोले ने आगे कहा कि अगर सारे ट्वीट देखें तो उनमें काफी समानता है, जैसे किसी ने उन्हें तैयार करके दिया हो। यही सब देखने के बाद महाराष्ट्र कांग्रेस ने गृह मंत्री से इसकी शिकायत की और इनकी जांच करने की मांग की है। सेलिब्रिटी को अपने फ्रेम में रहना चाहिए। संविधान ने सबको अपनी बात रखने का हक दिया है पर अपने नाम का इस्तेमाल किसी और की राजनैतिक रोटियां सेंकने के लिए करना गलत है, फिर वो कोई भी क्यों न हो हम उसका विरोध करेंगे।

घर के नीचे तहखाना बना कर बनाई जा रही थी देशी शराब

गुमराह करने के लिए घर के बाहर बनाया था मंदिर

पुणे। पुणे से सटे पिंपरी चिंचवड में सामाजिक सुरक्षा विभाग की टीम ने एक घर पर छापा मार कर अवैध रूप से चल रही देशी शराब बनाने की फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया है। खास यह है कि लोगों की नजर से बचाने के लिए इस फैक्ट्री को घर के नीचे बने तहखाने से चलाया जा रहा था और उसमें घुसने का एक संकरा सा रास्ता था। छापेमारी की इस करवाई में पुलिस ने 2200 लीटर देशी शराब जब्त की है। इस शराब को 63 बड़े प्लास्टिक केन में छिपा कर रखा गया था। बुधवार सुबह तक पुलिस

ने इस मामले में तीन महिलाओं समेत कुल 5 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। इनकी गिरफ्तारी के लिए भी प्रयास जारी है। सामाजिक सुरक्षा विभाग के सीनियर पुलिस इंस्पेक्टर विट्ठल कुबड़े ने बताया कि इस व्यवसाय की मुखिया ज्योति अविनाश मारवाड़ी (30) है और उसके घर में ही यह तहखाना बना हुआ था। कुबड़े के अनुसार, गश्त दौरान यह पता चला कि आरोपी मारवाड़ी ने दातवाड़ी, नेरे में अपने घर में शराब का भंडारण किया था। इसके बाद देर रात एक छापेमारी की कार्रवाई की गई। लोगों को गुमराह करने के लिए घर के बाहर महिला ने एक मंदिर भी बनवाया था। रोज सैंकड़ों की संख्या में लोग यहां दर्शन के लिए आते थे।

पुणे के वकील ने ईडी को भेजा नोटिस, मांगे जेरॉक्स के पैसे

मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी ने अब तक कई लोगों को नोटिस भेजकर अपने कार्यालय में बुलाया और उनसे पूछताछ की है। ऐसी कई खबरें आपने देखी और पढ़ी होंगी। हालांकि आज जो खबर हम आपके सामने लेकर आए हैं उसमें एक वकील ने ईडी को नोटिस भेजा है। इस नोटिस के जरिए वकील ने ईडी से जेरॉक्स के एक हजार 440 रुपये मांगे हैं। यह नोटिस वकील असीम सरोदे ने भेजा है। पूर्व मंत्री और एनसीपी नेता एकनाथ खडसे के कथित जमीन घोटाला मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने वकील असीम सरोदे से इस संबंध में दस्तावेज मांगे थे। आपको बता दें कि असीम सरोदे सोशल एक्टिविस्ट अंजली दमानिया के वकील हैं। हजारों पन्नों के इन दस्तावेजों को जेरॉक्स कराने में तकरीबन डेढ़ हजार रुपए का खर्चा आया था। जिसको देने के लिए असीम सरोदे ने ईडी से बातचीत की थी। ईडी ने भी पैसे देने पर अपनी हामी भरी थी। लेकिन यह पैसे अभी तक असीम सरोदे को मिल नहीं पाए हैं। इस वजह से यह नोटिस भेजा गया है। हालांकि ईडी इस नोटिस का क्या जवाब देती है यह देखना दिलचस्प होगा। अंजलि दमानिया ने हाल ही में प्रवर्तन निदेशालय के खिलाफ अदालत जाने की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि ईडी, सीबीआई या फिर पुलिस का इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए किया जा रहा है। बीजेपी हो या फिर एनडीए हर कोई इसका इस्तेमाल कर रहा है। खर्चे को दिए गए एकनाथ खडसे को दिए गए नोटिस के मामले में अंजली दमानिया ने कहा कि अभी इस मामले में मुझे बात नहीं करनी है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

अंधेरी में सिलेंडर गोदाम में लगी आग

आग से दो लोग 40 प्रतिशत तक झुलस गए जबकि बाकी दो लोग 60 प्रतिशत तक झुलस गए। अधिकारियों के मुताबिक गोदाम में कई एलपीजी सिलेंडर रखे हुए थे और आग लगने के दौरान उनमें से कई में विस्फोट हुआ। विस्फोट के कारण इलाके में दहशत फैल गई। मुंबई की मेयर किशोरी पेडनेकर और उप मेयर सुहास वाडकर ने घटनास्थल का दौरा किया और घायलों के स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिए कूपर अस्पताल गए। मेयर ने आसपास के बाशिंदों से भी बातचीत की जिनके मकानों को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने अधिकारियों को उचित मुआवजा दिए जाने का निर्देश दिया।

महाराष्ट्र की सियासत में बदलेंगे समीकरण?

हालांकि अभी तक इस चीज पर कोई पुख्ता मसौदा तैयार नहीं हुआ है। फडणवीस का कहना है कि अगर मनसे हिंदुत्व के साथ-साथ गैर मराठी लोगों को अपने साथ जोड़ती है तो वे हमारे साथ आ सकते हैं। यदि मनसे और बीजेपी एक साथ जुड़ते हैं तो निश्चित महाराष्ट्र की राजनीति में बवंडर आएगा। हालांकि यह कोई पहला मामला नहीं है जब बीजेपी और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के एक साथ आने की खबरें सुर्खियां बनी हैं। इसके पहले भी नितिन गडकरी और राज ठाकरे के बीच में वर्ली के एक होटल में मुलाकात हुई थी। तब गडकरी ने भी ऐसे ही संकेत दिए थे।

फर्जी तरीके से आधार कार्ड हासिल करने के आरोप में 10 नेपाली नागरिक गिरफ्तार

पूछताछ के दौरान, जांचकर्ताओं ने पाया कि उन्होंने नेपाली और बांग्लादेशी सहित कई विदेशी नागरिकों और कुछ प्रवासी भारतीय (एनआरआई) को फर्जी दस्तावेजों का उपयोग करके आधार कार्ड बनवाने में मदद की थी। उल्लेखनीय है कि आधार 12 अंकों की एक पहचान संख्या है, जो सरकार की ओर से भारतीय नागरिकों को भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा जारी की जाती है। अधिकारी ने कहा कि अपराध शाखा ने 10 नेपाली नागरिकों को गिरफ्तार किया, जिन्होंने पिछले मंगलवार को उपनगरीय दहीसर के कहदारपाड़ा और बोरीवली में दोनों से कार्ड प्राप्त किए थे। उन्होंने बताया कि ये सभी होटल या निर्माण स्थलों पर काम करते हैं। अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने उनके आधार कार्ड जब्त कर लिए। अदालत ने सभी को 11 फरवरी तक पुलिस हिरासत में भेज दिया। मामले में आगे की जांच जारी है।

दीप सिद्धू ने किया खुलासा

26 जनवरी के बाद से ही सिद्धू, उसकी पत्नी और करीबी लोगों के मोबाइल नंबरों को पुलिस ने सर्विलांस पर ले रखा था। अंदेशा है कि सिद्धू बिहार के रास्ते नेपाल भागना चाहता था। स्पेशल सेल को जब इसके करनाल के पास आने का इनपुट मिला तो उसे वहां ट्रैप लगाकर दबोच लिया गया। सिद्धू ने बताया है कि लॉकडाउन के बाद से उसके पास कोई काम नहीं था। 28 नवंबर को वह दिल्ली आया था। इधर, गिरफ्तारी के बाद मंगलवार सुबह से ही आरोपी के समर्थन में सोशल मीडिया पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं आने लगीं। कैलिफोर्निया नाम के ट्विटर अकाउंट समेत कई अकाउंट से उसे रिहा करने की मांग उठने लगी। सिद्धू किसान आंदोलन में लगातार एक्टिव था। कुछ दिन पहले उसे 'सिख फॉर जस्टिस' (एसएफजे) के साथ रिश्तों को लेकर एनआईए ने नोटिस भी जारी किया था। बता दें कि 26 जनवरी की हिंसा में आरोपी दीप सिद्धू का नाम झंडा फहराने और भीड़ को भड़काने के लिए मुकदमे में दर्ज है। इसके बाद से वह फरार था।

किसान आंदोलन

चक्का जाम के बाद किसानों का बड़ा ऐलान

18 फरवरी को रोकेंगे रेल परिचालन

संवाददाता

नई दिल्ली। देश में कृषि कानून को लेकर सड़क से संसद तक संग्राम छिड़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भरोसा देने के बावजूद किसान मानने को तैयार नहीं हैं। ताजा जानकारी के अनुसार किसानों ने चक्का जाम के बाद अब 18 फरवरी को रेल परिचालन रोकने का एलान किया है। वहीं इससे पहले किसान 14 फरवरी को मशाल रैली भी निकालेंगे।

किसानों ने कहा कि इस आंदोलन में अब तक हमारे कुल 204 किसान भी शहीद हो चुके है। शहीद किसान और शहीद जवान को श्रद्धांजलि देने के लिए किसान संगठन 14 फरवरी को शाम 7 बजे देशभर में मशाल जुलूस निकालकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। बता दें कि 14 फरवरी को पुलवामा हमला हुआ था। बता दें कि इससे पहले किसानों ने 6 फरवरी को 12 बजे से तीन बजे के बीच राष्ट्रव्यापी चक्का जाम का एलान किया था। इसके तहत राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय हाइवे को बंद करना था। दिल्ली की सीमाओं की घेराबंदी को देखते हुए किसानों ने दिल्ली-एनसीआर को इससे बाहर रखा था। हालांकि, बाद में उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के चक्का जाम को भी वापस ले लिया। बावजूद किसानों के एलान के दिल्ली पुलिस हर जगह सतर्क रही। गणतंत्र दिवस की हिंसा को देखते हुए सीमाओं समेत पूरी दिल्ली में सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम थे। गाजीपुर, सिंघु व टीकरी बॉर्डर पर कई स्तर का सुरक्षा बनाने के साथ दिल्ली के आईटीओ, लाल किला, अक्षरधाम, इंडिया गेट आदि संवेदशील इलाकों में पुलिसकर्मी व अर्धसैनिक बल के जवान तैनात थे। बॉर्डर के चार किलोमीटर के इलाके में सात लेयर की सुरक्षा की गयी थी। सिंघु, टिकरी और गाजीपुर बॉर्डर पर सुरक्षा के इंतजाम के साथ साथ दिल्ली में प्रवेश करने वाली करीब 125 सड़कों पर सुरक्षाकर्मी तैनात किये गये थे। सुबह से ही बॉर्डर पर ड्रोन से निगरानी रखी जा रही थी और बॉर्डर इलाके में वीडियोग्राफी करवायी जा रही थी। दिल्ली पुलिस के प्रवक्ता चिन्मय बिस्वाल ने बताया कि दिल्ली में चक्का जाम का असर नहीं था। दिल्ली में सभी कुछ सामान्य और शांतिपूर्ण रहा। एतियातन तौर पर दिल्ली पुलिस पूरी तरह से सतर्क थी और बॉर्डर से लेकर दिल्ली के अंदरूनी हिस्सों में पुलिसकर्मियों और अर्धसैनिक जवानों को तैनात किया गया था।

खट्टर को लग सकती है टिकैत की 'नजर'

किसान आंदोलन के चक्कर में बढ़ सकती हैं भाजपा सरकार की मुश्किलें

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस के बाद किसान आंदोलन ने राकेश टिकैत के नेतृत्व में जो टर्न लिया है, उसके परिणामों को लेकर चर्चा शुरू हो गई है। जानकारों का कहना है कि टिकैत ने जिस तरह से खुद को गाजीपुर बॉर्डर से बाहर निकालकर हरियाणा में ताबड़तोड़ किसान महापंचायत करनी शुरू की हैं, उससे मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर सरकार की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। प्रदेश में जिस तरह से उनकी महापंचायतों में गांवों से लोगों की भारी भीड़ जुट रही है, उसे देखकर कहा जाने लगा है कि मुख्यमंत्री खट्टर को टिकैत की नजर लग सकती है। किसान आंदोलन के चक्कर में भाजपा संकट में, अब किसानों के बीच से ऐसे नारे सुनाई पड़ रहे हैं। अखिल भारतीय आदर्श जाट महासभा के अध्यक्ष दीपक राठी कहते हैं कि टिकैत के कदमों पर सभी की नजर है। उन्होंने अभी तक जितनी भी महापंचायतें की हैं, वे सभी जाट बाहुल्य इलाकों में की हैं। हालांकि अभी

चुनाव दूर हैं, लेकिन मौजूदा स्थितियों में टिकैत, हरियाणा की भाजपा-जजपा सरकार को नुकसान पहुंचा सकते हैं। किसान आंदोलन में शामिल रहे एक बड़े नेता, जिन्होंने बाद में इस आंदोलन से किनारा कर लिया, उनका कहना है कि राकेश टिकैत की चाल देखने लायक होगी। वे जिस तेजी से खुद को जाट नेता के तौर पर साबित करने की भूल कर रहे हैं, वह उन्हें किसान आंदोलन से जल्द ही दूर कर देगी। केंद्र सरकार इस आंदोलन के शुरू होने से लेकर इसके टिकैत मॉडल में समाहित होने तक एक ही बात की रट लगाए हुए है। यह आंदोलन तो ढाई प्रदेशों का है। हमें तो बाकी देश के किसानों की बात भी सुननी है। हैरानी की बात तो ये है कि पहले भी किसान नेताओं ने सरकार के इस भ्रम को तोड़ने का प्रयास नहीं किया और अब राकेश टिकैत ने तो सरकार की बात पर मुहर ही लगा दी है। टिकैत अभी तक जितनी भी महापंचायतों में शामिल हुए हैं, वे सभी जाट बाहुल्य इलाकों में हुई हैं। कुरुक्षेत्र के गुमथला गढ़ू की अनाज मंडी, जींद का कंडेला और चरखी-दादरी में राकेश टिकैत महापंचायत कर चुके हैं। अगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उन इलाकों को देखें, जहां पर आंदोलन को गति दी जा रही है, वहां भी जाट समुदाय का खासा प्रभाव है। शामली, बागपत, मथुरा, बिजनौर और दूसरे क्षेत्रों में राकेश टिकैत किसान महापंचायतों की गतिविधियां बढ़ा रहे हैं।

खट्टर का हेलीकॉप्टर तक नहीं उतरने दिया था: भाजपा को समर्थन दे रही जेजेपी के नेता भी अब किसान आंदोलन पर पैनी निगाह रख रहे हैं। अगर टिकैत, प्रदेश में किसान आंदोलन को यूं ही तेजी से बढ़ाते रहे तो आने वाले समय में जजपा भी राज्य सरकार को समर्थन जारी रखने के फैसले पर विचार कर सकती है। इसका कारण यह है कि जजपा का मुख्य वोट बैंक किसान समुदाय ही माना जाता है। ऐसे में जजपा, अपने वोट बैंक को खिसकने नहीं देगी। लोकसभा चुनावों में भले ही प्रदेश के किसान वर्ग, जिसमें जाट समुदाय का बाहुल्य है, ने सभी दस सीटें भाजपा की झोली में डाल दी थीं। उसके बाद विधानसभा चुनाव में खट्टर को जाट समुदाय की खासी नाराजगी का सामना करना पड़ा। नतीजा, भाजपा अपने दम पर सरकार नहीं बना सकी। अब कुछ वैसी ही स्थिति बन रही है। राकेश टिकैत, प्रदेश सरकार के लिए मुसीबत का सबब बन सकते हैं। इस बाबत राकेश टिकैत का कहना है कि जो सरकार, किसानों का विरोध कर रही है तो वे उसे दोबारा अवसर क्यों देंगे। हम देश के सभी हिस्सों में किसान महापंचायत करेंगे।

भारत-चीन सीमा पर नौ महीने बाद शांति

दोनों देशों ने पैंगोंग त्सो से हटाने शुरू किए टैंक!

नई दिल्ली। भारत और चीन के बीच पिछले साल से चले आ रहे सीमा विवाद के बीच दोनों पक्षों ने पैंगोंग त्सो झील के दक्षिणी किनारे से टैंकों और इम्मैच्ट्री युद्धक वाहनों को वापस लाना शुरू कर दिया है। यह जानकारी बुधवार को इस डिसइंगेजमेंट योजना के संबंधित अधिकारियों ने दी। इस संबंध में अधिकारियों ने बताया कि चीन के विदेश मंत्रालय की ओर से इस बात का एलान करने के बाद कि बीजिंग ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) से अपने सैनिकों को वापस बुलाना शुरू कर दिया है, लेकिन इन अहम रणनीतिक चोटियों पर सैनिक अभी भी मौजूद हैं। पूर्वी लद्दाख में संघर्ष के कई बिंदुओं में से एक से बख्तरबंद वाहनों और उपकरणों की वापसी की खबर दोनों देशों के बीच हुई पिछली कमांडर स्तरीय वार्ता के करीब 15 दिन बाद आई है। दोनों पक्षों ने सैनिकों को पीछे हटाने को लेकर 24 जनवरी को बैठक कर चर्चा की थी। उधर, चीन के सरकारी मीडिया के अनुसार रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता कर्नल वु कियान ने बुधवार को कहा कि पूर्वी लद्दाख में पैंगोंग झील के उत्तरी और दक्षिणी छोर पर तैनात भारत और चीन के अग्रिम पंक्ति के सैनिकों ने बुधवार से व्यवस्थित तरीके से पीछे हटना शुरू कर दिया। कियान ने कहा कि पूर्वी लद्दाख में पैंगोंग झील के उत्तरी और दक्षिणी किनारों पर तैनात भारत और चीन के अग्रिम पंक्ति के सैनिकों ने बुधवार से व्यवस्थित तरीके से पीछे हटना शुरू कर दिया। उनके इस बयान से संबंधित खबर चीन के आधिकारिक मीडिया ने साझा की है। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बीच कमांडर स्तर की नौवें दौर की वार्ता में बनी सहमति के अनुरूप दोनों देशों के सशस्त्र बलों की अग्रिम पंक्ति की इकाइयों ने 10 फरवरी से पैंगोंग झील के उत्तरी और दक्षिणी किनारों से व्यवस्थित तरीके से पीछे हटना शुरू कर दिया। दोनों देशों के बीच पूर्वी लद्दाख में पिछले साल मई से गतिरोध चला आ रहा है। दोनों देश कई दौर की कूटनीतिक और सैन्य वार्ता कर चुके हैं। दोनों देशों की सेनाओं के बीच 24 जनवरी को मोल्डो-चुशूल सीमा स्थल पर चीन की ओर कोर कमांडर स्तर की नौवें दौर की वार्ता हुई थी।

डीडीसी अध्यक्ष चुनाव: पुलवामा और गांदरबल में गुपकार का कब्जा, महबूबा मुफ्ती ने इस तरह दी जीत की बधाई

जम्मू। जम्मू-कश्मीर डीडीसी अध्यक्ष चुनाव में गुपकार गठबंधन के उम्मीदवार सैयद बारी अंद्राबी (पीडीपी) को पुलवामा के अध्यक्ष के रूप में चुना गया है। जबकि मुख्तार बंद नेशनल कांफ्रेंस (नेकां) को उपाध्यक्ष के रूप में चुना गया है। उधर, गांदरबल सीट से नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) के उम्मीदवार नुजहत इश्फाक को अध्यक्ष चुना गया। साथ ही पीडीपी के बिलाल अहमद शेख को उपाध्यक्ष चुना गया।

दोनों सीटों पर गठबंधन को जीत मिलने पर महबूबा मुफ्ती ने प्रत्याशियों को बधाई देते हुए कहा कि अनुकरणीय चरित्र और साहस दिखाने के लिए पुलवामा और गांदरबल के डीडीसी सदस्यों को बधाई। दबावों और खतरों के बावजूद आप गुपकार गठबंधन के साथ खड़े रहे। बता दें कि गुपकार गठबंधन के नेताओं ने हाल ही में भाजपा पर खरीद-फरोख्त और दबाव बनाने का का आरोप लगाया था।

किसान आंदोलन के बीच 500 अकाउंट्स परमानेंट सस्पेंड, आपत्तिजनक कंटेंट की विजिबिलिटी घटाई

नई दिल्ली। किसान आंदोलन के बीच सोशल मीडिया को लेकर सरकार की सख्ती के चलते ट्विटर ने 500 अकाउंट हमेशा के लिए सस्पेंड कर दिए हैं। सरकार ने ट्विटर को कई विवादित अकाउंट और हैशटैग हटाने का नोटिस दिया था, इसके जवाब में ट्विटर ने एक्शन लिया। सोशल मीडिया कंपनी ने बुधवार को यह जानकारी दी। उसने बताया कि जिन अकाउंट्स को सस्पेंड किया गया है, वे कंपनी की पॉलिसी का वॉयलेशन कर रहे थे। सरकार ने आईटी एक्ट की धारा 69ए के तहत ट्विटर को नोटिस दिया था। इस धारा में 7 साल की जेल का प्रोविजन है। नोटिस में कहा गया था कि ट्विटर एक्शन नहीं लेगा तो उस पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। ट्विटर के मुताबिक पिछले हफ्तों में हुई हिंसा की घटनाओं को देखते हुए आपत्तिजनक कंटेंट

वाले हैशटेग की विजिबिलिटी भी कम कर दी गई है। साथ ही कहा कि दिल्ली में रिपब्लिक डे को हुई हिंसा के बाद भारत में अपने नियमों को लागू करवाने के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं, उनके बारे में रेगुलर अपडेट दे रहे हैं। ट्विटर ने यह भी बताया कि कुछ अकाउंट्स ऐसे भी हैं, जिन्हें भारत में ब्लॉक किया गया है, लेकिन वे दूसरे देशों में एक्सेस रहेंगे। साथ ही कहा, फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन को प्रोटेक्ट करते हुए न्यूज मीडिया, पत्रकार, एक्टिविस्ट और पॉलिटिशियन से जुड़े किसी अकाउंट पर एक्शन नहीं लिया गया है, क्योंकि हमें नहीं लगता कि सरकार ने जो निर्देश दिए हैं वे भारतीय कानून के मुताबिक हैं। ट्विटर ने कुछ अकाउंट्स पर एक्शन नहीं लेने की जो वजह बताई है, उस पर भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या ने निशाना साधा है। सूर्या ने सोशल मीडिया पर लिखा, ऐसा लगता है कि ट्विटर खुद को भारतीय कानून से ऊपर समझता है। वह खुद ही तय कर रहा है कि क्या कानून मानना है और क्या नहीं।

सउदी अरब के एयरपोर्ट पर हूती विद्रोहियों का ड्रोन से हमला, नागरिक विमान में लगी आग

दुबई। दक्षिणी सऊदी अरब के एक एयरपोर्ट पर यमन के हूती विद्रोहियों ने बुधवार को ड्रोन से हमला कर दिया। इसकी वजह से एक नागरिक विमान में आग लग गई। जानकारी के अनुसार यह घटना सऊदी अरब के आभा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट की है और आग पर काबू पा लिया गया है। बता दें कि यह एयरपोर्ट यमन की सीमा के काफी पास है और हूती विद्रोही अक्सर इसे निशाना बनाते रहते हैं। हूती विद्रोहियों ने इस हमले का जिम्मा लिया है और इसे सैन्य निशाना बताया है। सऊदी के सरकारी टीवी अल-अखबारिया टेलीविजन ने विद्रोहियों के खिलाफ लड़ रहे रियाध की अगुवाई वाले सैन्य संगठन के हवाले से कहा, 'हूती लड़ाकों की ओर से सऊदी अरब के आभा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट में डर से भरा हुआ एक आपराधिक आतंकी हमला किया गया। इस हमले की वजह से एयरपोर्ट पर मौजूद एक यात्री विमान में आग लग गई, जिस पर काबू पा लिया गया है।' हालांकि, सैन्य संगठन ने यह नहीं बताया कि यह हमला किस तरह से किया गया था। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने दावा किया है कि उन्होंने चार ड्रोन की मदद से आभा एयरपोर्ट पर हमला किया। उल्लेखनीय है कि उत्तरी यमन का अधिकांश हिस्सा हूती विद्रोहियों के नियंत्रण में है।

fresh &easy
GENERAL STORE

ALL TYPES OF SAUDI DATES AVAILABLE
SPECIALIST IN:
DRY FRUITS
& MANY MORE ITEMS AVAILABLE HERE
Fast & Free DELIVERY
ADDRESS + 91 8652068644 / + 91 7900061017
Shop No. 18, Parabha Apartment, Sejal Park, Beside Oshiwara Bus Depot, Link Road, Goregaon (W), Mumbai-400104

बुलढाणा हलचल

केंद्र सरकार कृषि कानून को वापस लें और देश के किसानों के साथ न्याय करें : प्राध्यापक रिजवान खान

संवाददाता/अशफाक युसुफ

बुलढाणा। केंद्र की मोदी सरकार तानाशाही रवैया अपना रही है, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव प्रा. रिजवान खान ने भाजपा सरकार से कृषि कानूनों को तत्काल निरस्त करने की मांग की। उन्होंने कहा कि पिछले दो महीनों में १२५ से अधिक किसानों ने अपनी जान गवाई है। किसानों ने तीन काले कृषि कानूनों को निरस्त करने की मांग की है, लेकिन तानाशाह सरकार उनकी बात को अनदेखा कर रही है। आज न केवल किसान आंदोलन में शामिल है बल्कि युवा, छात्र, महिलाएं और समाज के सभी वर्ग इस कानून का विरोध कर रहे हैं। प्रा. रिजवान खान ने मोदी सरकार

पर निशाना साधते हुए कहा कि केंद्र सरकार को इस बात की परवाह नहीं है कि पिछले दो महीनों से दिल्ली की सीमाओं पर कड़ाके की ठंड में, किसान खुले में आंदोलन कर रहे है कि सरकार उन काले कानूनों को रद्द करेगी जो उन्हें उद्योगपतियों के गुलाम बनाना चाहते है। केंद्र सरकार को इस बात की परवाह नहीं है कि हर एक दिन एक किसान अपनी जान गंवा रहा है। और केंद्र सरकार बंगाल और असम विधानसभा चुनाव के बारे में चिंतित हैं। प्रा. रिजवान खान ने आगे कहा कि किसानों के हितों की रक्षा करने के बजाय, सरकार कुछ उद्योगपतियों के हितों की रक्षा कर रही थी और किसानों की बात सुनने के बजाय, वह अहंकार में ऐसे निर्णय ले रही है। इसलिए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव प्रा. रिजवान खान ने सरकार से इस कानून को रद्द करने को मांग की है।

बुलडाणा वन विभाग की रेस्क्यू टीम ने कुएँ में गिरे हुए भालू को दिया जीवनदान

भालु को सुरक्षित रूप से ज्ञानगंगा अभयारण्य में छोड़ दिया

बुलडाना। वन क्षेत्र के ग्राम डोंगरशेवली शिवारा में एक खेत के कुएं में रात को भालू के गिरने की घटना 10 फरवरी, 2021 को उजागर होने के बाद, बुलडाना वन विभाग की बचाव टीम ने मौके पर पहुंचकर भालू को बचाया और उसे जंगल में छोड़ दिया। इस घटना के बारे में संक्षिप्त जानकारी यह है कि चिखली तालुका के किन्होळा के रहने वाले पाटिलबुवा भीवासन बाहेकर इस का घेत गट क्र. 316 है। इसी के घेत के कुए मे भालू गिरा हुवा देखा किसान ने तुरंत

बुलडाणा वन विभाग को जानकारी किया। जानकारी के आधार पर बुलडाणा के डीएफओ अक्षय गजभिये, एसीएफ रणजीत गायकवाड उनके आदेश पर बुलडाना वन विभाग के बचाव दल के वनपाल राहुल चव्हाण, संदीप मानटे, विलास मेरत, संदीप मडावी व अग्नि रक्षक मौके पर पहुंचे। रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू होने से पहले, कुएं में एक घाट (चारपाई) की मदत से भालू को बाहर निकालने का प्रयास किया गया। लेकिन यह संभव नहीं था, इसलिए एक पिंजरे को कुएं में डाल दिया गया, और बहुत मेहनत के बाद, भालू पिंजरे में घुस गया और पिंजरे को कुएं से बाहर निकाल लिया गया। डीएफओ अक्षय गजभिए के आदेश पर जिले के ज्ञानगंगा अभयारण्य में भालू को सुरक्षित रूप से छोड़ा गया।

रामपुर हलचल

प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित कर पूंजि पतियों को पहुंचाया जा रहा है लाभ

संवाददाता/नदीम अख्तर

टाण्डा (रामपुर)। सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को लेकर दलालों आदि के माध्यम से लाभान्वितों को उसका लाभ न मिलकर रखा जाता है वंचित, सरकार के आदेशों की खुलैआम उड़ाई जा रही हैं धाज्जियां गरीबों को मिलने वाली प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित कर पूंजि पतियों को पहुंचाया जा रहा है लाभ, स्वीकृत धनराशी को अपने मकानों में शामिल कर कराया जाता है मकान का निर्माण,सांठ गांठ के चलते दिया जा रहा है बखूबी अन्जाम, विभागीय सांठ गांठ के चलते सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं में खुलैआम दलालों आदि के माध्यम से प्रधानमंत्री आवास योजना में धांधली बरतकर अधिकांश गरीब लोगों को उसका हक नहीं मिल पा रहा है गरीबों को मिलने वाली कालौनियों से वंचित रखकर पूंजी पति लोगों के कार्यों को बखूबी अन्जाम देकर विभागीय सांठ गांठ के चलते खुलैतौर पर अपनी अपनी जैबें गरम कर सर्वे आदि के कराये जाने के नाम पर अपात्र लोगों से धन की वसूली कर कालौनी बनाये जाने को लेकर कार्थ की इति श्री कर दी जाती हैं। लाभान्वित का नाम सूची में आने पर उसकों संतुष्टता का पाठ पढ़ाकर गद गद कर दिया जाता है साथ ही उससे सर्वे कराये जाने के नाम पर धन वसूली कर ली जाती है। किसी कारण वश उसका नाम सूचि से उड़ाकर कालौनी निरस्त होने को लेकर कहा जाता है तब ऐसी दशा में लाभान्वित इधर उधर चक्कर काटता नजर आता है अपनी आश की किरणों लेकर निराश होकर अपने घर बैठ जाता है। दलालों आदि के माध्यम से कमजोर एवं गरीब वर्ग के लोगों को कोई लाभ नहीं मिल पा रहा है खासतौर से पूंजि पति लोग ही इसका लाभ उठाने में असफलता होती दिखाई देती रहती है साथ ही पूंजि पति अपने नये मकानों के साथ मिलने वाली योजना के अन्तर्गत धनराशी को अपने मकान निर्माण में लगा दिया जाता है। प्रधानमंत्री आवास योजना में गरीबों के साथ लीपा पोती कर विभागीय एवं दलालों आदि के माध्यम से पात्र लोगों को अपात्रता की श्रेणी देकर लाभान्वित कर दिया जाता है। जो इसके दायरे में नहीं आते हैं लीपा पोती करने वालों की लगातार शिकायतों की उजागर होती हैं लेकिन उन शिकायतों को हवा में उड़ाकर नजर अन्दाज कर दिया जाता है। प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत मन्जूरी होने के तुरन्त बाद कालौनी बनाये जाने के नाम पर आने वाली पहली किस्त में से ही दलाली का पैसा वसूल कर लिया जाता है जिसका आंशिक भाग उच्च अधिकारियों को भी पहुंचाया जाता है। लाभान्वित धन राशी देने में अपनी कोई आना कानी दिखाता है तब उसको अगली किस्त आने पर रोक लगाये जाने की धमकीं दे दी जाती है मजबूरन अपनी तेय रकम भरपूर तरीके से वसूल कर ली जाती है। भ्रष्टाचार की प्रक्रिया चरम सीमाओ पर है जिसकी जांच के उपरान्त ही दूध का दूध एवं पानी का पानी गुणा भाग सामने आ सकता है वंचित रहे लोगों को भी इसका लाभ मिल सकता है।

समस्तीपर हलचल

पोस्टर और क्विज प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

संवाददाता/जकी अहमद

समस्तीपर। समस्तीपुर जिला शिक्षा पदाधिकारी के निदेर्शानुसार बुधवार को राजकीय किसान उच्चतर माध्यमिक विद्यालय 32 वें सुरक्षा माह के अंतर्गत पोस्टर एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान नवम वर्ग कि छात्रा संजू कुमारी, द्वितीय स्थान नवम वर्ग कि छात्रा राज लक्ष्मी और तृतीय स्थान नवम वर्ग कि छात्रा सोनम कुमारी ने हासिल किया। क्विज प्रतियोगिता में आरती कुमारी,अनिषा कुमारी और निकिता कुमारी की टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया। वही द्वितीय स्थान पर राज लक्ष्मी,विद्या कुमारी और अनु प्रिया तथा द्वितीय स्थान पर मुस्कान कुमारी,अंजलि तथा सोनम रही। प्रतियोगिता में अन्य छात्राएं संजू कुमारी, सत्यांसी कुमारी, अन्नू कुमारी के अलावा नवम वर्ग की छात्राओं ने भाग लिया। मौके पर प्रधान अध्यापक सतीश कुमार,शिक्षक वीरेंद्र कुमार, नीरज कुमार,सुजीत झा तथा अन्य सदस्य गण मौजुद थे। हेड मास्टर ने छात्र छात्राओं को संदेश दिया कि हमें सड़क पर हर प्रकार की सावधानी बरतनी चाहिए जिससे जान माल का नुकसान न हो।

सरसों के खेत में युवती कि लाश मिलने से क्षेत्र में फैली सनसनी

समस्तीपुर। मथुरापुर ओपी क्षेत्र में सारी पंचायत के तहत डॉक्टर हरी मोहन गुप्ता के क्लीनिक से सटे बाजार समिति जाने वाली मार्ग के पास एक तोड़ी के खेत में लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। मिली जानकारी के अनुसार जब उक्त खेत में आसपास कि महिला मवेशी के लिए घांस काटने गई तो देखा कि एक युवती का लाश पड़ा हुआ है। महिलाओं द्वारा शोर मचाने पर आसपास के लोग लाश देखने के लिए दौड़ पड़े और देखते ही देखते लोगों की भीड़ जमा हो गई। जानकारी मिलने पर मथुरापुर ओपी के थाना अध्यक्ष संजय कुमार सिंह अपने टीम के साथ मौके पर पहुंच कर लाश को अपने कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल भेज दिया तथा आवश्यक कार्रवाई में जुट गए है। लाश देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने इस युवती को अन्यंत्र जगह हत्या कर यहां लाकर तोड़ी के खेत में दिया है। युवती ने लाल फ्रॉक के ऊपर ब्लू रंग का स्वीटर, लाल रंग का सलवार के अलावा जूता मोजा पहने हुई थी। ड्रेस से लगता है कि युवती इंटर कि छात्रा है उसका उम्र 16 साल है। मौके पर स्थानीय मुखिया दिनेश पासवान, माले नेता जीवछ पासवान आदि पहुंचे हुए थे।

जिलाधिकारी समस्तीपुर ने किया ई-एपिक केंद्र का उद्घाटन

संवाददाता/जकी अहमद

समस्तीपुर। समस्तीपुर जिलाधिकारी शशांक शुभंकर के द्वारा बुधवार 10 फरवरी को समाहरणालय परिसर स्थित योजना भवन में ई-एपिक केंद्र का उद्घाटन किया गया। भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली द्वारा मतदाताओं को डिजिटल वोटर कार्ड उपलब्ध कराने हेतु ई-एपिक अभियान की शुरूआत की गई है। निर्वाचक सूची में पंजीकृत मतदाता अपने एपिक नंबर या फॉर्म नंबर तथा मोबाइल फोन पर प्राप्त ओटीपी के माध्यम से ई-एपिक डाउनलोड कर सकते हैं। ई-एपिक डाउनलोड कर इसका प्रिंट निकाल कर इसका उपयोग किया जा सकता है । सभी पंजीकृत मतदाताओं को पूर्व की भांति एपिक भी दिया जाएगा। ई-एपिक की सुविधा उन्हें दी जा रही एक अतिरिक्त सुविधा होगी। मतदाताओं से अधिक से अधिक संख्या में ई-एपिक डाउनलोड करने हेतु अपील किया गया। मौके पर जिला जनसंपर्क पदाधिकारी ऋषभ राज व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

किडनी को रखना है हैल्दी तो डाइट में शामिल करें ये फूड्स

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए किडनी का ठीक रहना बहुत जरूरी हैं। किडनी हमारे शरीर से वेस्ट और एक्स्ट्रा पानी को फिल्टर करके यूरिन के जरिए बाहर निकालता हैं। किडनी के खराब हो जाने पर बाथरूम करने में कठिनाई और हाथ-पैरों में सूजन आने लगती हैं। किडनी में खराबी होने पर हार्ट में प्रॉब्लम बढ़ने की संभावना बढ जाती है। इसे ठीक रखने के लिए हमें एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर सुपरफूड्स ही खाने चाहिए। सही खाद्य पदार्थों के सेवन से किडनी के साथ-साथ शरीर के अन्य अंग भी ठीक से काम करते हैं। किडनी को हेल्थी रखने के लिए हमें एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर इन सुपरफूड्स का सेवन करना चाहिए।

1. गोभी
गोभी में फाइटोकेमिकल्स और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में पाया जाता हैं जो कि फ्री रेडिकल्स के कारण होने वाले नुकसान को रोकता हैं। इसमें पोटाशियम कम होने के कारण यह डायलिसिस के मरीज के लिए भी काफी फायदेमंद हैं। वह गोभी को कच्चा या पका कर भी खा सकते हैं।

2. बेरीस
बेरीस में मैंगनीज, विटामिन सी, फाइबर और फोलेट काफी मात्रा में पाए जाते हैं जो कि किडनी को स्वस्थ रखने में काफी सहायक होते हैं।

3. मछली
मछली में ओमेगा-3 फैटी एसिड्स होने के कारण किडनी को कई बिमारियों से बचाता है। मछली में प्रोटीन बहुत मात्रा में पाया जाता है। किडनी की प्रॉब्लम कम करने के लिए आप केवल उबली, पकी हुई या भुनी हुई मछली का ही सेवन करें।

4. अंडे का सफेद भाग
अंडे के सफेद भाग भी किडनी को ठीक रखने के लिए काफी मदद करता हैं। इसमें हाई क्वालिटी प्रोटीन होता है जो किडनी के मरीजों के लिए फायदेमंद है। आप केवल अंडे के सफेद भाग का आमलेट बनाकर खाएं और उबले अंडे के अंदर के पीले भाग को न खाएं।

5. जैतून का तेल
किडनी को स्वस्थ रखने के लिए जैतून का तेल काफी फायदेमंद रहा है। इसमें मौजूद ओलेक एसिड और एंटी-इन्फ्लेमेटरी फैटी एसिड्स हमारे शरीर में ऑक्सीडेशन को कम करते हैं।आप इसमें अपना भोजन पका कर भी खा सकते हैं।

6. लहसुन
लहसुन में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट किडनी और हार्ट प्रॉब्लम की संभावना कम करते हैं। दिन में एक या दो कच्ची लहसुन की कलियों का सेवन करने से शरीर में हाई कोलेस्ट्रॉल कम होता हैं।

30 की उम्र के बाद जवां दिखने के लिए फोलो करें ये स्किन केयर रूटीन

उम्र बढ़ने के साथ ही त्वचा अपनी चमक खोने लगती है जिससे चेहरे की खूबसूरती कम हो जाती है। जब आप 20 साल के होते हैं तो चेहरे पर मुंहासे, दाग-धब्बे पड़ना आम सी समस्या होती है लेकिन जैसी ही 30 की आयु पार करते हैं। तो त्वचा में कई तरह की प्रॉब्लम हो जाती है। इस उम्र में कोलेजन और इलास्टिन कमजोर होने के साथ ही चेहरे, आंखों के आस- पास और माथे पर फाइन लाइंस उभरने लगती हैं। इस समय त्वचा की देखरेख करना आवश्यक होता है। अगर आप इस उम्र में भी स्किन की चमक बनाएं रखना चाहते हैं तो आज हम आपको कुछ ऐसे स्किन केयर रुटीन बताने जा रहे हैं जिनको अपना कर आपकी त्वचा चमकदार बनी रहेगी।

1. आई क्रीम
आंखों के आस-पास की स्किन बहुत ज्यादा संवदेनशाली होने के कारण जल्दी ही डैमेज होने लगती है। इससे आंखों के पास झुर्रियां पड़ने लगती है। इन से बचने के लिए इस समय आंखों की तरफ खास ध्यान देना चाहिए। आप चाहे तों आंखों के आस पास की त्वचा पर आई क्रीम लगाएं। इसको लगाने से यह पूरी तरह से मॉइस्चराइज और हाइड्रेट बनी रहेगी।

2.फेशियल मिस्ट
पानी न पीने के कारण त्वचा अपनी नमी खो देती है जिससे स्किन शुष्क हो जाती है। त्वचा को नर्म बनाने के लिए फेशियल मिस्ट लगाएं। कुछ दिनों तक इसको लगाने से चेहरे पर निखार आना शुरू हो जाऐगा। आप इसको 30 की उम्र पार करने से पहले भी लगा सकते हैं।

3. फेस स्क्रब
30 की आयु पार करते ही त्वचा अपना प्राकृतिक निखार खोने लगती हैं। निखार को बरकार रखने के लिए हफ्ते में एक या दो बार फेस स्क्रब का इस्तेमाल करना जरूरी है। आप चाहे तो घर में ही स्क्रब बना सकते हैं। इसके लिए1 टी स्पून चोकर में 1 टी स्पून जैतून का तेल मिक्स करे, इस मिक्सचर को चेहरे पर स्क्रब की तरह इस्तेमाल करें।

4.विटामिन सीसीरम
विटामिन सी स्किन के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह त्वचा में कोलाजेन का निर्माण करता है। अगर आपकी सकिन में एंटी एजिंग दिखाई दे रही हैं तो विटामिन सी सीरम लगाना ना भूलें। इससे सकिन टाइट बनेगी और ग्लो भी आएगा।

5. मॉइश्चराइजर
इस उम्र में चेहरे पर झूरिया पड़ जाती है, इनसे बचने के लिए SPF स्किन के लिए काफी जरूरी होता है। झुर्रियां की समस्या से निजात पाने के लिए रोजाना मॉइश्चराइजर का इस्तेमाल करें।

हैंगओवर की समस्या से हैं परेशान तो अपनाएं ये घरेलू नुस्खे

कुछ लोगों को शराब पीने की इतनी गंदी आदत होती है कि वह कभी भी इसका सेवन कर लेते हैं। शराब पीने के अगले दिन भी उनका नशा नहीं उतरता जिससे उन्हें सिरदर्द, उल्टी होना चक्कर आना जैसी प्रॉब्लम होने लगती हैं। इसको ही हैंगओवर कहते हैं। जरूरत से ज्यादा शराब पीने से यह समस्या होना आम है। शराब पीना आसान होता है लेकिन मुश्किल तब आती है जब इसका नशा उतारना होता है। कई बार हैंगओवर के कारण लोगों के सामने शर्मिंदा भी होना पड़ता है। अगर आपको भी शराब पीने के बाद हैंगओवर की समस्या हो जाती है तो आज हम आपको इसके लिए कुछ घरेलू नुस्खे बताएँगें। इनको अपना कर आप हैंगओवर प्रॉब्लम से छुटकारा पा सकते हैं। तो आइए जानते हैं उन नुस्खों के बारे में।

हैंगओवर के लक्षण
1. तेजी से सिरदर्द होने लगता है।
2. हैंगओवर में चक्कर आने शुरू हो जाते हैं।
3. पूरे दिन कमजोरी महसूस करने के साथ ही इम्यून सिस्टम भी खराब होना।
4. पेट दर्द और उलटी भी हो सकती है।
5. शरीर में दर्द ,स्ट्रेस और चिड़चिड़ापन आदि।
6. आवाज में भारीपन।
7. हैंगओवर की अवस्था में आंखें लाल हो जाती हैं।

8. दिल की धड़कन का तेजी से चलना।

ऐसे करें हैंगओवर दूर
1. नारियल पानी
शराब का नशा उतारने के लिए तरल पदार्थों का सेवन करना चाहिए। आप चाहे तो नारियल पानी भी पी सकते हैं। इसमें मौजूद मिनरल्स पेट साफ करने का काम करते हैं। इससे हैंगओवर जल्दी उतर जाता है।

2. शक्कर और नमक का घोल
नशा उतारने के लिए पानी में नमक और शक्कर का घोल मिक्स करके पीएं। इसको पीने से अल्कोहल के कारण हुई पानी की कमी दूर होगी। बॉडी से टॉक्सिन्स बाहर निकलेंगे और हैंगओवर उतर जाएगा।

3. शहद
कुछ लोग मानते हैं कि मिठा खाने से नशा और ज्यादा बढ जाता है लेकिन ऐसा नहीं है किसी भी चीज को सहीं ढ़ग से लेने से फायदा मिलता है। हैंगओवर उतारने के लिए एक गिलास पानी में 1 चम्चम शहद मिलाकर पीएं।इसमें मौजूद फ्रक्टोज बॉडी के लिए अच्छा होता है और हैंगओवर दूर करता है।

4. मौसमी, संतरा और पाइनएप्पल
नशा उतारने के लिए इनका जूस पीना फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन्स और फाइबर होते हैं।मौसमी, संतरा और पाइनएप्पल का जूस पीने से शरीर में पाए जाने वाले विषैले पदार्थों को बाहर निकाल जाते हैं। इससे हैंगओवर दूर हो सकता है।

5. ब्लैक कॉफी
ब्लैक कॉफी को पीने से सिरदर्द की समस्या से राहत मिलती है। इसका सेवन करने से हैगंओवर भी जल्दी उतर जाता है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

लीजा हेडन ने फैंस को दी खुशखबरी

एक्ट्रेस और मॉडल लीजा हेडन ने फैंस को एक खुशखबरी दी है। लीजा ने बताया है कि वह जल्द ही तीसरी बार मां बनने वाली हैं। वह इस साल जून में एक बच्चे को जन्म देने वाली हैं। लीजा ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर यह जानकारी दी है। लीजा ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर अपना अनुभव साझा किया है। लीजा ने शेयर किए गए वीडियो के कैप्शन में लिखा, '#3 जून को आ रही है।' अब फैंस कयास लगा रहे हैं कि वह 3 जून को मां बनने वाली हैं। लीजा ने इंस्टाग्राम पर अपने वीडियो में कहा, 'आलस्य या सुस्ती के कारण मैं अपनी गर्भावस्था से जुड़ी जानकारियों को अब तक साझा नहीं कर पायी थीं।' इसके बाद आगे वीडियो में लीजा अपने बेटे से पूछती हैं कि बताओ मम्मी के पेट में क्या है? इसका जवाब देते हुए उनके बेटे जैकी ने बेबी गर्ल होने की बात कही। इसके बाद आगे के वीडियो में लीजा काफी उत्साहित दिखीं और उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त की। लीजा हेडन ने अक्टूबर 2016 में ब्रिटिश बिजनेसमैन और अपने बॉयफ्रेंड डीनो लालवानी के साथ शादी रचाई थी। बता दें कि लीजा दो बेटों जैक और लियो की मां हैं। वह साल 2020 में दूसरी बार मां बनी थीं। इससे पहले उन्होंने साल 2017 में बेटे जैक को जन्म दिया था। वह अभी अपने परिवार के साथ हॉन्गकॉन्ग में रहती हैं।

महेश बाबू बनेंगे राम, दीपिका बनेंगी सीता और रावण के रोल में होंगे रितिक रोशन!

फिल्म प्रोड्यूसर मधु मंटेना रामायण पर फिल्म बनाने जा रहे हैं जो थ्री-डी में होगी और जिसमें बेहतरीन स्पेशल इफेक्ट्स का उपयोग किया जाएगा। इस फिल्म की स्टार कास्ट पर काम चल रहा है। दीपिका पादुकोण और रितिक रोशन को चुना जा चुका है। अब दक्षिण भारतीय फिल्मों के बड़े स्टार महेश बाबू को यह फिल्म ऑफर की गई है। फिल्म से जुड़े लोगों का कहना है कि दीपिका पादुकोण फिल्म में सीता की भूमिका में हैं और रितिक रोशन रावण का किरदार अदा कर रहे हैं। महेश बाबू फिल्म में श्रीराम के रोल में नजर आएंगे। फिलहाल महेश ने हां नहीं कहा है। गौरतलब है कि फिल्म डायरेक्टर ओम राउत भी रामायण पर एक बड़े बजट की मूवी बनाने जा रहे हैं जिसमें प्रभास राम का रोल अदा कर रहे हैं जबकि रावण के किरदार में सैफ अली खान हैं। सीता के रोल में कृति सेनन हैं। यह भी एक बड़े बजट की फिल्म है। सूत्रों का कहना है कि मधु ने राम का रोल प्रभास को ही ऑफर किया था, लेकिन वे आदिपुरुष साइन कर चुके थे।

मनोज बाजपेयी अपने किरदार के लिए अगले 50 दिन रहेंगे अंडरग्राउंड

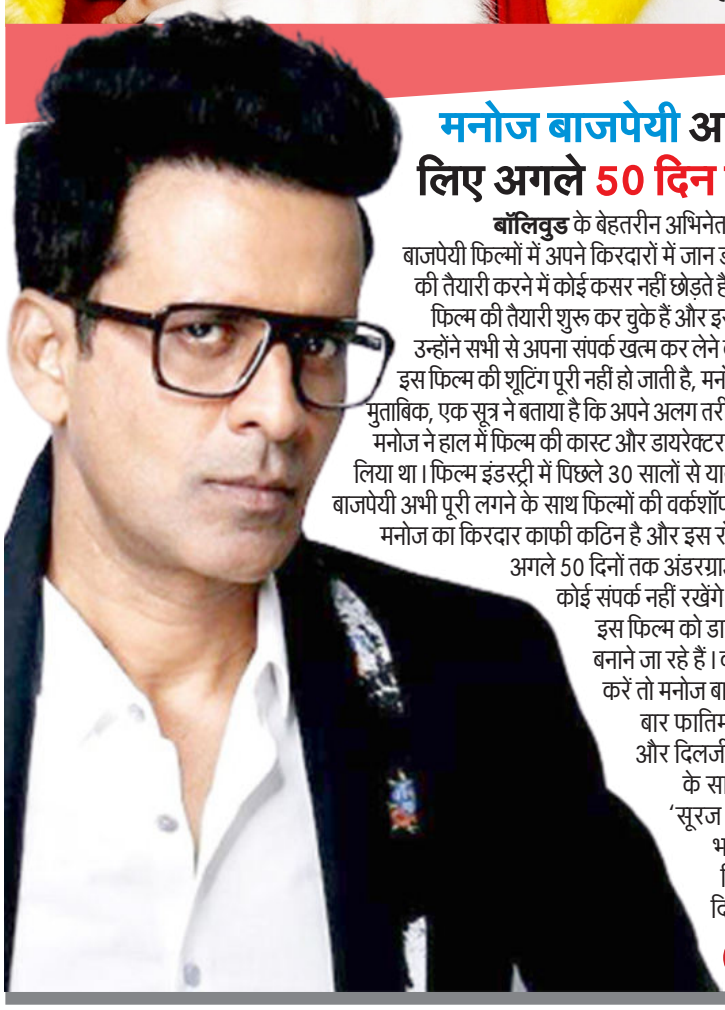

बॉलिवुड के बेहतरीन अभिनेताओं में से एक माने जाने वाले मनोज बाजपेयी फिल्मों में अपने किरदारों में जान डाल देते हैं। मनोज अपने किरदारों की तैयारी करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। अब वह अपनी आगे आने वाली फिल्म की तैयारी शुरू कर चुके हैं और इसके किरदार में ढलने के लिए उन्होंने सभी से अपना संपर्क खत्म कर लेने का फैसला किया है। जब तक इस फिल्म की शूटिंग पूरी नहीं हो जाती है, मनोज किसी से भी संपर्क नहीं रखेंगे। खबर के मुताबिक, एक सूत्र ने बताया है कि अपने अलग तरीके के किरदारों के लिए पहचान रखने वाले मनोज ने हाल में फिल्म की कास्ट और डायरेक्टर के साथ 15 दिन की वर्कशॉप में भाग लिया था। फिल्म इंडस्ट्री में पिछले 30 सालों से यादगार भूमिकाएं निभा रहे मनोज बाजपेयी अभी पूरी लगने के साथ फिल्मों की वर्कशॉप में शामिल होते हैं। फिल्म में मनोज का किरदार काफी कठिन है और इस रोल में आने के लिए मनोज अगले 50 दिनों तक अंडरग्राउंड रहेंगे और किसी से कोई संपर्क नहीं रखेंगे। मनोज बाजपेयी की इस फिल्म को डायरेक्टर कनु बहल बनाने जा रहे हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो मनोज बाजपेयी पिछली बार फातिमा सना शेख और दिलजीत दोसांझ के साथ फिल्म 'सूरज पे मंगल भारी' में दिखाई दिए थे।